महात्मा बुद्ध के उपदेश का वर्णन

March 2019

Friday 29

(1) सम्यक दृष्टि → बुद्ध ने निर्माण करने के लिए चार आर्यसत्यों की घोषणा की अर्थात - दुःख, दुःख का कारण, दुःख का दमन, दुःख के दमन का उपाय का ज्ञान प्राप्त करना ही सम्यक दृष्टि कहलाती है।

(2) सम्यक संकल्प → बुद्ध ने सभी प्रकार के भोग-विलास और सांसारिक दुखों सुखों की कामनाओं का त्याग कर के अपने आपको सुधारने का संकल्प सम्यक संकल्प कहलाता है इसमें सांसारिक वस्तुएँ सगे सम्बन्धियों मित्रों आदि का मोह त्यागना तथा दूसरों को हानि पहुँचाने से बचना चाहिए।

Saturday 30

(3) सम्यक वाक् → सदैव सत्य बोलना तथा बुद्ध से वचना सम्यक वाक् अथवा सम्यक वचन कहलाता है

(4) सम्यक कर्म — इसका अर्थ शुभ कार्य करना तथा निन्दनीय कामों जैसे - चोरी, जुआ खेलना, आदि का त्याग करना। इस प्रकार के प्रयत्न से मनुष्य सदाचारी, अहिंसात्मक एवं जितेन्द्रिय कहलाता है।

सम्यक आजीवन → मनुष्य को अपनी जीविका कमाने में हर एक से ईमानदारी बरतनी चाहिए जीविका करते समय ऐसे कामों से बचना चाहिए जिनसे

दूसरों को हानि और हिंसा का निमंत्रण न हो। कसाई, विष-विक्रेता, दासों का क्रयविक्रय को बुद्ध निषेध बताया है।

सम्यक व्यायाम → इसका तात्पर्य सम्यक उद्योग है। मनुष्य को कुविचारों, दुष्ट प्रवृत्तियों को दमन करने के लिए सदा सदुद्योग करते रहना चाहिए।

सम्यक स्मृति → सम्यक स्मृति का तात्पर्य उन सभी अच्छी-अच्छी बातों को याद रखना जो बुद्ध के उपदेशों द्वारा ग्रहण कर चुका हो, मन, वचन, कर्म और कार्यों पर सतर्क रहना चाहिए।

सम्यक समाधि → इसका तात्पर्य मनुष्य को एकाग्र होकर ब्रह्म में लीन होना और परमानन्द को प्राप्त करना इसकी चार अवस्थाएँ हैं इन्हीं चार अवस्थाओं को पार करके मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है: प्रथम, मन को शुद्ध द्वितीय मनुष्य का हृदय शुद्ध तब चार आर्यसत्य में पूर्ण रूप से आस्था रखने लगता है।